दश धर्मों की सीढ़ी | By Rakesh Kumar Sharma

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

मुक्ति की मंज़िल हो.....हो.....
मुक्ति की मंज़िल क्षण में मिल जाए रे
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे

क्रोध शमा का नाश करे
बोध ज्ञान को पूर्ण करे
जोश में जब प्राणी आये
होश पूर्णतया खो जाए
आतम स्वभावी हो.....हो.....
आतम स्वभावी शमा धर्म जगाये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

अहम् भाव में आएगा
मार्दव गन ना पायेगा
तुच्छ, सभी को जानेगा
उच्च आप को मानेगा
उसके जीवन में हो.....हो.....
उसके जीवन में ना मार्दव आये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

कुटिल भाव मन में आये
मायाचारी कहलाये
आर्जव उत्तम धर्म रहा
कईऐसे पायें अहो कहा
आर्जव का धारी हो.....हो.....
आर्जव का धारी जिन ज्ञान जगाये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

लोभ पाप का बाप कहा
उसके जो आधीन रहा
धन में चित्त लगाएगा
धर्म नहीं वह पायेगा
उत्तम इस जग में हो.....हो.....
उत्तम इस जग में वृष शौच कहाये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

हाँ झूठ नहीं बोलो प्राणी
कहती है ये जिनवाणी
सत्य धर्म जो खोयेगा
बीज पाप का बोयेगा
चारों गतियों में हो.....हो.....
चारों गतियों में हो वह दु:ख उठाये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

छह निकाय के जीव कहें
मन इन्द्रिय छह भेद रहे
जीवों का रक्षाकारी
इन्द्रिय मन का जयकारी
उत्तम साद संयम हो.....हो.....
उत्तम साद संयम हो पाके शिव जाए रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

कर्मों के क्षय हेतु अरे
इच्छाओं का रोध करें
बाह्यभ्यंतर सुतप कहा
उत्तम तप यह विशद रहा
उत्तम तप धारी हो.....हो.....
उत्तम तप धारी हो शिव पदवी पाए रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

बाह्य परिग्रह दश जानो
चौदह अभ्यन्तर मानो
इनका जो परिहारी है
उत्तम त्याग का धारी है
त्यागी इस जग को हो.....हो.....
त्यागी इस जग को ताज के शिव जाये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

जो किंचित ना रागी हो
पूर्ण रूप विरागी हो
आकिंचन वह कहलाये
कर्मो से मुक्ति पाए
उत्तम अकिंचन हो.....हो.....
जो धर्म जगाये रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

ब्रह्मचर्य व्रत धारी है

आतम ब्रह्म विहारी है
जो आतम को ध्याता है
मिज में ही राम जाता है
उत्तम ब्रह्मचर्य हो.....हो.....
उत्तम ब्रह्मचर्य .....
धार शिव सुख पाए रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

हाँ एकाशन उपवास करें
व्रत का धारी कलेश हरे
क्षमावाणी फिर करते हैं
क्षमा हृदय में धरते हैं
पर्वों को पाके हो.....हो.....
पर्वों को पाके पावन हो जाए रे.....

दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।
दश धर्मो की सीढ़ी हमको जब मिल जाए रे।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a6%e0%a4%b6-%e0%a4%a7%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a5%8b%e0%a4%82-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%b8%e0%a5%80%e0%a4%a2%e0%a4%bc%e0%a5%80-by-rakesh-kumar-sharma/